

बी.ए. कार्यक्रम

(बी.ए.जी.)

सत्रीय कार्य

(जुलाई, 2025 एवं जनवरी, 2026 सत्रों के लिए)

BSKC – 133 संस्कृत नाटक



मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- 110068

बी.ए. (कार्यक्रम) संस्कृत-कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2025-26)

पाठ्यक्रम कोड : BAG/BSKC -133/2025-26

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

- 1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
- 2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक :

नाम :

पता :

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :

सत्रीय कार्य कोड :

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :

दिनांक :

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई, 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026

जनवरी, 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

सत्रीय कार्य : BSKC – 133 संस्कृत नाटक

पाठ्यक्रम कोड BSKC – 133

पाठ्यक्रम शीर्षक : संस्कृत नाटक

सत्रीय कार्य : BSKC – 133/TMA/2025-26

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं :-

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न :-

15X2=30

1. अधोलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :-

(अ) भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम् ।

यदि तेऽस्ति धनुःश्लाघा स राजा परिपाल्यताम् ॥

अथवा

पितुः प्राणपरित्यागं मातुरैश्वर्यलुब्धताम् ।

ज्येष्ठभ्रातुः प्रवासं च त्रीन् दोषान् कोऽभिधास्यति ? ॥

(ब) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥

अथवा

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी

दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेशय ।

भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं

शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ॥

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न :-

5X5=25

2. संस्कृत नाटकों के विकास क्रम का वर्णन कीजिए ।
3. वीथी रूपक को लक्षण सहित स्पष्ट कीजिए ।
4. भरतवाक्य क्या है? लक्षण सहित स्पष्ट कीजिए ।
5. 'प्रतिमानाटकम्' नाटक के नामकरण की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।
6. "भर्तृनाथा हि नार्यः" इस सूक्ति को स्पष्ट कीजिए ।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

7. भवभूति के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए । 10
8. "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला" उक्ति को स्पष्ट कीजिए । 10
9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के आधार पर कण्व का चरित्र-चित्रण कीजिए । 10
10. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :- 15

(अ) कथानक

(ब) डिम

(स) आकाशभाषित

(द) प्रस्तावना